International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

महाविद्यालय स्तर के प्राध्यापको के व्यावसायिक तनाव का अध्ययन

डॉ. सरिता शर्मा

प्राचार्या, अरिहंत महाविद्यालय

मुकेश कुमार दांगी
एम.एड. शोधार्थी

सारांश
शिक्षक किसी भी शैक्षिक व्यवस्था की धुरी है एवं शिक्षण जगत में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान है।एक अध्यापक को अपनी भूमिका अति महत्वपूर्ण बनाने के लिए संवेगात्मक और व्यवसायिक रूप से सन्तुष्ट होना चाहिए। जीवन की गुणवत्ता और कार्य सन्तुष्टि का अनुभव न केवल कौशल, सोच, संवेगात्मक प्रतिक्रिया बल्कि पूरे व्यवहार को प्रभावित करता है और पूरी शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को भी प्रभावित करता है।
इसलिए महाविद्यालय के प्राध्यापकों के बीच व्यवसायिक दबाव, कार्य सन्तुष्टि और जीवन की गुणवत्ता के बारे में जाना गया है।

कूटशब्दः व्यावसायिक तनाव

प्रस्तावना
शिक्षा की प्रक्रिया में महाविद्यालय के प्राध्यापक का विशेष महत्व है, महाविद्यालय पद्धति की सरलता उसी की कुशलता एवं संतुलनात्मक योग्यता पर निर्भर करती है। महाविद्यालय के हर अंग से प्राध्यापक की छवि दिखाई देती है। महाविद्यालय का वातावरण, प्रगति, पतन, मानसिक, भौतिक तथा नैतिक परिस्थितियां सभी प्राध्यापक के व्यक्तित्व की कहानी कहते हैं। प्राध्यापको की अनेक शिक्षण क्षेत्र से संबंधित समस्याओं का वह समाधान कर विद्यार्थीयो का मार्गदर्शन करता है। एक प्राध्यापक महाविद्यालय के सभी दायित्व अच्छे तभी निभा सकता है जब वह अपने कार्य में रूचि रखता है अैर वह अपने कार्य में रूचि तभी रख सकेगा जब वह अपने कार्य के प्रति संतोष रखता हो या अपने व्यवसाय को लेकर तनाव में नहीं रहता हो। व्यवसाय या जीविका का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। व्यवसाय मानव को जीवन यापन का साधन ही प्रदान नहीं करता अपितु उचित व्यवसाय में स्थान मिलने पर मानव को आत्म संतुष्टि प्राप्त होती है तथा उसमें आत्म बल का संचार होता है। मानव जीवन में सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा आत्म निर्भरता की दृष्टि से व्यवसाय का महत्वपूर्ण स्थान है। समाज में उन नवयुवकों को सम्मानीय दृष्टि से देखा जाता है जो अध्ययन समाप्त करके जीविकोपार्जन कर आत्म निर्भर बनने में प्रयत्नशील है। मानव जीवन का उद्देश्य स्वयं को समृद्ध एवं सुखी बनाते हुए समाज, राष्ट्र व संस्कृति को विकसित एवं अक्षुण्ण बनाने से है। मानव विवेकशील है अतः उनके जीवन की शैली कुछ विशिष्टता लिये हुए होती है। शिक्षा मनुश्य में पूर्णता की अभिव्यक्ति है, शिक्षा के द्वारा इच्छाशक्ति में सार्थक नियंत्रण हो सकता है। शिक्षा व्यक्तियों का निर्माण करती है। चरित्र को उत्कृष्ट बनाती है और व्यक्ति को संस्कारित करती है। शिक्षा वह साधन है, जो व्यक्ति के आंतरिक गुणों का विकास करती है। शिक्षा बालक के नैतिक, शारीरिक, संवेगात्मक, बौद्धिक एवं आंतरिक ज्ञान को बाहर लाने में सहायक क्रिया है। शिक्षा बालक को जीवन के महत्व से अवगत कराती है एवं जीवन यापन के लिये उचित साधनों का ज्ञान प्रदान कर बालक को आत्मनिर्भर बनाती है ताकि वह अपने क्रियाकलापों से राष्ट्र को उन्नतशील बना सके। शिक्षण का उद्देश्य बालक को कल्पनाशील व चिंतनशक्ति विकसित करना होता है। शिक्षा विद्यार्थियों को जीवन के प्रति एक दिशा प्रदान करती है, नया रूप व आकार देती है व लक्ष्य निर्धारित करने हेतु निर्देषन प्रदान करती है ताकि अपने कार्यों का पूर्ण रूप से संचालन कर सके। शिक्षा का तात्पर्य सिर्फ ज्ञान अर्जित करना नही अपितु इसकी भविष्य में क्या उपयोगिता है, उसे समझना है। शिक्षा बौद्धिक विकास में सहायक है एवं किसी राष्ट्र के पुर्ननिर्माण का सर्वोत्तम साधन है। इसकी प्रकृति युग सापेक्ष होती है। युग की गति व उससे नवीन परिवर्तनों के आधार पर प्रत्येक युग में शिक्षा के स्वरूप व उद्देश्य बदल जाते है।
गौतम बुद्ध ने कहा है – दीपक का उकृष्ट गुण होता है कि वह अपनी योग्यता (प्रकाश) को नष्ट किये बिना दूसरे को प्रकाशित करता है। यदि कोई शिक्षक मार्गदर्शक, चिंतक की भूमिका अदा करता है तो वह उपरोक्त कथन को सत्यापित करता है। शिक्षक को समाज का अभिन्न अंग माना जाता है क्योंकि वह उत्कृष्ट व्यक्तियों व बौद्धिकता की खोज के जिम्मेदार होते हैं।

डॉ. राधाकृष्णन ने शिक्षकों को द्वितीय जीवन देने वाला कहा है। वर्तमान समय में शिक्षकीय कार्य बहुमुखी भूमिका युक्त चुनौती पूर्ण व्यवसाय है। शिक्षक को अपनी भूमिका को पूरा करने हेतु पूर्ण उत्साह व ऊर्जा के साथ कार्य करना होता है। शिक्षकीय व्यवसाय के प्रति आस्था, विद्यार्थियों व संस्था के प्रति जिम्मेदारी शिक्षक को उच्च स्थान पर पहुँचाती है। शिक्षक के इस चुनौती पूर्ण कार्य के परिणाम का संबंध उसके नवाचारिता, उत्साह पर निर्भर करता है, क्योंकि शिक्षण की पूरी प्रक्रिया उसके चारों ओर केन्द्रित होती है। उसका कार्य के प्रति आस्था व इच्छा अच्छे परिणाम प्रदर्शित करती है। शिक्षक का अपने कार्य के प्रति नकारात्मक व्यवहार उसके कार्य को प्रभावित करता है। हर व्यक्ति अपने जीवन में विभिन्न तनाव की स्थितियों से गुजरता है और शिक्षक भी इन तनावों का अनुभव करते हैं। आज हमारा देश विकासशील देश माना जाता है। शिक्षक का यह उत्तरदायित्व है कि वह तनाव व दबाव को दूर कर अपना कार्य सफलतापूर्वक संपन्न कर सके। तनाव व दबाव के कारण ही शिक्षक की
क्षमताओं और योग्यताओं का ह्रास हो रहा है जिसे हम व्यावसायिक तनाव के रूप में परिभाषित कर सकते हैं और ये तनाव न सिर्फ शिक्षकों के अध्यापन को प्रभावित करता है अपितु उसके मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व की समग्रता को भी प्रभावित करता है।

तनावः को किसी ऐसे शारीरिक, रासायनिक या भावनात्मक कारक के रूप में समझा जा सकता है, जो शारीरिक तथा मानसिक बेचौनी उत्पन्न करे और वह रोग निर्माण का एक कारक बन सकता है। ऐसे शारीरिक या रासायनिक कारक जो तनाव पैदा कर सकते हैं, उनमें – सदमा, संक्रमण, विष, बीमारी तथा किसी प्रकार की चोट शामिल होते हैं। तनाव के भावनात्मक कारक तथा दबाव कई सारे हैं और अलग–अलग प्रकार के होते हैं। कुछ लोग जहां "स्ट्रेस" को मनोवैज्ञानिक तनाव से जोड़ कर देखते हैं, तो वहीं वैज्ञानिक और डॉक्टर इस पद को ऐसे कारक के रूप में दर्शाने में इस्तेमाल करते हैं, जो शारीरिक कार्यों की स्थिरता तथा संतुलन में व्यवधान पैदा करता है। जब लोग अपने आस–पास होने वाली किसी चीज से तनाव ग्रस्त महसूस करते हैं, तो उनके शरीर रक्त में कुछ रसायन छोड़कर अपनी प्रतिक्रिया देते हैं।

व्यवसायिक तनावः व्यवसायिक तनाव व्यक्ति के प्रत्यक्ष योग्यता से अधिक कार्य की मांग करना है। जब व्यक्ति कार्य को अच्छी तरह से करने के लिए तैयार न हो, तब दबाव होता है तथापि विद्यार्थी
परिकल्पना
$H_{0\,1}$सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालय स्तर के प्राध्यापको के व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर नहीं होता।
$H_{0\,2}$सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालय स्तर के प्राध्यापको में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के आधार पर व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर नहीं होता।
3. सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालय के प्राध्यापको में लिंग के आधार पर व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर नहीं होता।

शोध के तकनीकी शब्दों की व्याख्या
महाविद्यालय स्तर के प्राध्यापकः महाविद्यालय स्तर के प्राध्यापक से तात्पर्य उन प्राध्यापको से है जो महाविद्यालयीन कक्षा में विभिन्न विषय में अध्यापन कार्य कर रहे हैं तथा जिन्हें कम से कम दस वर्ष का शिक्षण अनुभव प्राप्त है।

व्यावसायिक तनावः व्यावसायिक तनाव एक सम्बन्धित बहुआयामी परिणाम है जो कि तब उत्पन्न होता है जब परिस्थिति की मांग व्यक्ति की क्षमता से अधिक होती है और ऐसे में वे प्रतिक्रिया करते हैं। इस प्रक्रिया में उनकी शारीरिक, संज्ञानात्मक व व्यवहारिक कार्यप्रणाली सम्मिलित होती है। जब व्यक्ति को अपने कार्य से नकारात्मक भावों का अनुभव होता है जैसे परेशानी, चिन्ता, दबाव और नीरसता आदि को हम व्यावसायिक तनाव कहते हैं।

न्यादर्शः प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यप्रदेश के इन्दौर जिले के शासकीय एवं निजि महाविद्यालयों को चयनित किया गया है। जिसमें से यादृच्छिक न्यादर्शन विधि से महाविद्यालय स्तर के प्राध्यापको का चयन किया।

शोध विधिः सर्वेक्षण प्रविधि अध्ययन के
चर :– 1. स्वतंत्र चर :– व्यावसायिक तनाव
2. आश्रित चर :– महाविद्यालय स्तर के प्राध्यापक

शोध उपकरणः डॉ ए.के. श्रीवास्तव और डॉ ए पी सिंह द्वारा निर्मित व्यावसायिक तनाव मापनी

शोध परिसीमन
1. प्रस्तुत शोध कार्य हेतु इन्दौर जिले के सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालय के प्राध्यापको को ही लिया गया है।
और प्राध्यापक दोन

ों के जीवन में दबाव का मुख्य स्रोत प्रस्तुत अध्ययन केवल प्राध्यापको के व्यावसायिक तनाव तक महाविद्यालय को समझा जाता है। इसलिए बहुत से विद्यार्थी पढाई छोड़ देते हैं या फेल हो जाते हैं जो प्रत्येक के लिए सही नहीं होता है। प्राध्यापक दबाव को नकारात्मक संवेग जैसे क्रोध, चिंता, तनाव, न्यूनता, निराशा आदि के अनुभव के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

उद्देश्य

1. नीजी महाविद्यालय स्तर के पुरूष प्राध्यापको के व्यावसायिक तनाव का अध्ययन करना।
2. नीजी महाविद्यालय स्तर के महिला प्राध्यापको के व्यवसायिक तनाव का अध्ययन करना।
3. सरकारी महाविद्यालय स्तर के पुरूष प्राध्यापको के व्यावसायिक तनाव का अध्ययन करना।
4. सरकारी महाविद्यालय स्तर के महिला प्राध्यापको के व्यवसायिक तनाव का अध्ययन करना।
5. सरकारी एवं नीजी महाविद्यालय स्तर के पुरूष एवं महिला प्राध्यापको के व्यावसायिक तनाव में अन्तर कर अध्ययन करना।ही सीमित है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य हेतु महाविद्यालय स्तर के महाविद्यालयों को ही लिया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण व व्याख्या

प्रस्तुत शोध प्रबंध की परिकल्पनाओं का परिक्षण सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालय स्तर के प्राध्यापको के व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर नहीं होता।

तालिका नं0 1: सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालय स्तर के प्राध्यापकों के व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर नहीं होता। अध्ययन करने के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा t मान –

समस्या से संबंधित चर	प्राध्यापको की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	जमान	सार्थकता का स्तर
सरकारी	100	118.92	17.49	2.28	0.05 स्तर
नीजी	100	124.25	15.41		

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

अतः उपरोक्त तालिका का अवलोकन करने पर पाया गया कि सार्थकता के स्तर 0.05 से अधिक है। तालिका मान 0.01 स्तर सरकारी महाविद्यालय स्तर के प्राध्यापको के व्यावसायिक तनाव का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन क्रमशः 118.92 एवं 17.49 है। उपरोक्त आँकड़ों के अध्ययन करने के पश्चात पाया गया कि नीजी महाविद्यालय स्तर के प्राध्यापको के व्यावसायिक तनाव में प्राध्यापको का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन क्रमशः 124.25 एवं 15.41 है, और इनका तुलनात्मक मान (जमान) 2.28 है। यह तुलनात्मक मान पर 2.58 0.05 स्तर पर 1.96 जो कि गणना किये गये मान से अधिक है। अतः इस प्रकार हमारी शून्य परिकल्पना – ''सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालय स्तर के प्राध्यापको के व्यावसायिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।'' अस्वीकृत सिद्ध होती है, क्योंकि हमारे गणना किये गये मान में सार्थक अन्तर है।

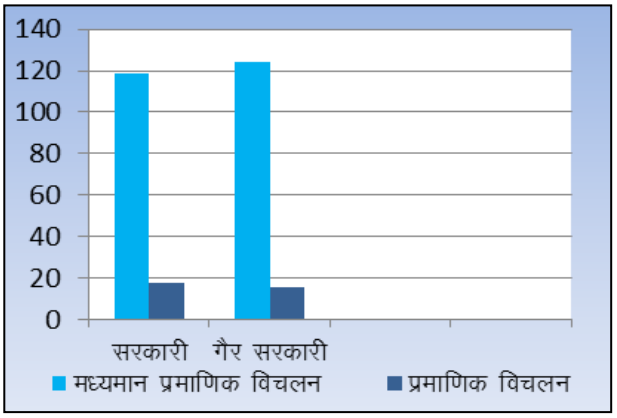

$H_{0\,2}$ सरकारी महाविद्यालय स्तर के प्राध्यापको में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के आधार पर व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर नहीं होता।

तालिका नं0 2: सरकारी महाविद्यालय स्तर के प्राध्यापको में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के आधार पर व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर नहीं होता।का अध्ययन करने के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा t मान –

समस्या से संबंधित चर	प्राध्यापको की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	जमान	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	100	120.36	14.88	3.33	0.05 स्तर एवं 0.01 स्तर
शहरी	100	127.11	13.34		

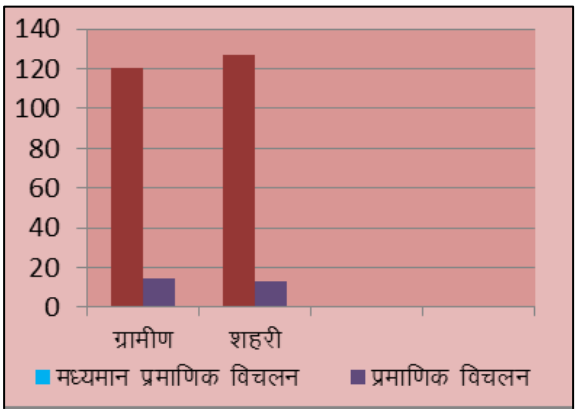

अतः उपरोक्त तालिका का अध्ययन करने पर पाया गया कि सरकारी महाविद्यालय स्तर के प्राध्यापको में ग्रामीण क्षेत्र के आधार पर व्यावसायिक तनावका मध्यमान व प्रमाणिक विचलन क्रमशः 120.36 एवं 14.88 है। उपरोक्त आँकड़ों के अध्ययन करने के पश्चात पाया गया कि सरकारी महाविद्यालय स्तर के प्राध्यापको में शहरी क्षेत्र के आधार पर व्यावसायिक तनाव का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन क्रमशः127.11 एवं 13.74 है, और इनका तुलनात्मक मान (t मान) 3.33 है। यह तुलनात्मक मान सार्थकता के स्तर 0.01 तथा 0.05 स्तर से अधिक है। तालिका मान –0.01 स्तर पर 2.58 0.05

$H_{0\,3}$ नीजी महाविद्यालय स्तर के प्राध्यापको में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के आधार पर व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर नहीं होता।

तालिका नं0 3: नीजी महाविद्यालय स्तर के प्राध्यापको में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के आधार पर व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर नहीं होता। का अध्ययन करने के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा t मान

समस्या से संबंधित चर	प्राध्यापको की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	जमान	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण	100	126.47	14.02	1.97	0.05 स्तर
शहरी	100	128.29	12.29		

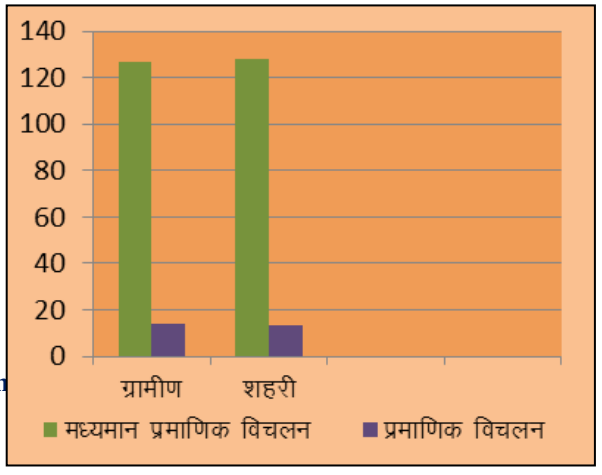

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

स्तर पर 1.96 जो कि गणना किये गये मान से अधिक है।
अतः इस प्रकार हमारी शून्य परिकल्पना – ''सरकारी महाविद्य
ालय स्तर के प्राध्यापको में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के आध
ार पर व्यावसायिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।''
अस्वीकृत सिद्ध होती है, क्योंकि हमारे गणना किये गये मान में
सार्थक अन्तर है।

अतः उपरोक्त तालिका का अध्ययन करने पर पाया गया कि

तालिका नं0 5: गैर सरकारी महाविद्यालयो के प्राध्यापको में लिंग के नीजी महाविद्यालय स्तर के प्राध्यापको में ग्रामीण क्षेत्र के आध ार पर व्यावसायिक तनाव का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन क्रमशः 126.47 एवं 12.29 है। उपरोक्त आँकड़ों के अध्ययन करने के पश्चात पाया गया कि नीजी महाविद्यालय स्तर के प्राध्यापको में शहरी क्षेत्र के आधार पर व्यावसायिक तनाव का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन क्रमशः 128.11 एवं 12.29 है, और इनका तुलनात्मक मान (t मान) 1.97 है। यह तुलनात्मक मान सार्थकता के स्तर 0.05 से अधिक है।
तालिका मान – 0.01 स्तर पर 2.58 0.05 स्तर पर 1.96 जो कि गणना किये गये मान से अधिक है। अतः इस प्रकार हमारी शून्य परिकल्पना – ''नीजी महाविद्यालय स्तर के प्राध्यापको में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के आधार पर व्यावसायिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।'' अस्वीकृत सिद्ध होती है, क्योंकि हमारे गणना किये गये मान में सार्थक अन्तर है।

$H_{0\ 4}$ नीजी महाविद्यालयो के प्राध्यापको में लिंग के आधार पर व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर नहीं होता।

तालिका नं0 4: नीजी महाविद्यालयों के प्राध्यापको में लिंग के आधार पर व्यवसायीक तनाव मे सार्थक अन्तर नही होता। का अध्ययन करने के लिये मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा **t** मान

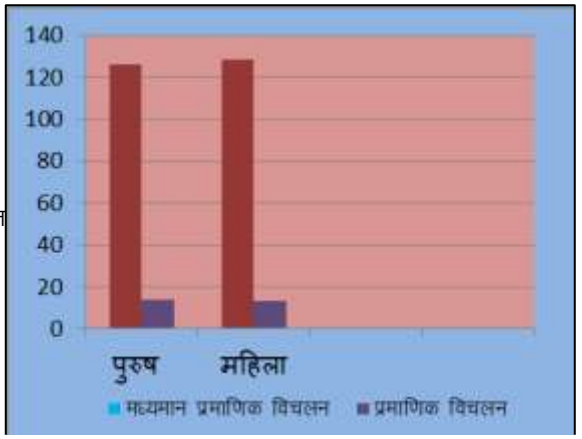

आधार पर व्यावसायिक तनाव में सार्थक अन्तर नहीं होता।का अध्ययन

समस्या से संबंधित चर	प्राध्यापको की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	जमान	सार्थकता का स्तर
पुरूष	100	126ण्12	13ण्97	2ण्19	0.05 स्तर
महिला	100	128ण्33	12ण्31		

समस्या से संबंधित चर	प्राध्यापको की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	t मान	सार्थकता का स्तर
पुरूष	100	125.69	13.93	1.99	0.05 स्तर
महिला	100	127.41	13.55		

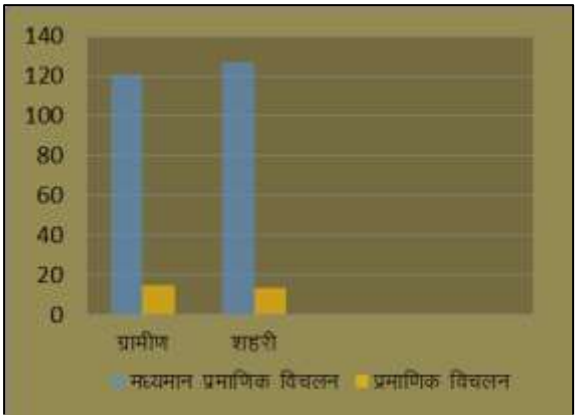

अतः उपरोक्त तालिका का अध्ययन करने पर पाया गया कि नीजी महाविद्यालयों के पुरूष प्राध्यापको में व्यावसायिक तनाव का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन क्रमशः 126.12 एवं 13.97 है। उपरोक्त आँकड़ों के अध्ययन करने के पश्चात पाया गया कि नीजी महाविद्यालयों के महिला प्राध्यापको में व्यावसायिक तनाव का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन क्रमशः 128.33 एवं 12.31 है और इनका तुलनात्मक मान (t मान) 2.19 है। यह तुलनात्मक मान सार्थकता के स्तर 0.05 स्तर से अधिक है। तालिका मान – 0.01 स्तर पर 2.58 0.05 स्तर पर 1.96 जो कि गणना किये गये मान से अधिक है।
अतः इस प्रकार हमारी शून्य परिकल्पना – ''नीजी महाविद्यालयों के प्राध्यापको में लिंग के आधार पर व्यावसायिक तनाव में कोई सार्थक अतंर नहीं हैं।'' अस्वीकृतसिद्ध

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

अतः उपरोक्त तालिका का अध्ययन करने पर पाया गया कि नीजी महाविद्यालयों के पुरूष प्राध्यापको में व्यावसायिक तनाव का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन क्रमशः 125.69 एवं
13.93 है।
उपरोक्त आँकड़ों के अध्ययन करने के पश्चात पाया गया कि नीजी महाविद्यालयों के महिला प्राध्यापको में व्यावसायिक तनाव में का मध्यमान व प्रमाणिक विचलन क्रमशः 127ण्41एवं
13ण्55 है और इनका तुलनात्मक मान (t मान) 1ण्99 है। यह तुलनात्मक मान सार्थकता के स्तर 0.05 स्तर से अधिक है। तालिका मान – 0. 01 स्तर पर 2.58 0.05 स्तर पर 1.96 जो कि गणना किये गये मान से अधिक है।
अतः इस प्रकार हमारी शून्य परिकल्पना – '' नीजी महाविद्यालयों के प्राध्यापको में लिंग के आधार पर व्यावसायिक तनाव में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।'' अस्वीकृत सिद्ध होती है, क्योंकि हमारे गणना किये गये मान में सार्थक अन्तर है।होती है, क्योंकि हमारे गणना किये गये मान में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष

अध्ययन उपरान्त परिणामों से ज्ञात हुआ कि .....

अध्ययन के उपरान्त परिणामों से ज्ञात हुआ कि सरकारी एवं

1. नीजी महाविद्यालयों के प्राध्यापको में व्यावसायिक तनाव अधिक पाया गया।
2. अध्ययन के उपरान्त परिणामों से ज्ञात हुआ कि सरकारी एवं नीजी महाविद्यालयों के प्राध्यापको में क्षेत्र के आधार पर व्यावसायिक तनाव अधिक पाया गया।
3. अध्ययन के उपरान्त परिणामों से ज्ञात हुआ कि सरकारी एवं नीजी महाविद्यालयों के प्राध्यापको में लिंग के आधार पर व्यावसायिक तनाव अधिक पाया गया।
4. अध्ययन के उपरान्त हमें ज्ञात होता है कि सरकारी एवं नीजी महाविद्यालयों के प्राध्यापको में व्यावसायिक तनाव अधि ाक पाया गया।
5. अध्ययन के उपरान्त हमें ज्ञात होता है कि सरकारी एवं नीजी महाविद्यालयों के प्राध्यापको में क्षेत्र के आधार पर व्यावसायिक तनाव के बीच सार्थक अन्तर है।
6. 8. अध्ययन के उपरान्त हमें ज्ञात होता है कि सरकारी एवं नीजी महाविद्यालयों के प्राध्यापको में लिंग के आधार पर व्यावसायिक के बीच सार्थक अन्तर है।

References

1. Acquadro-Maran, D., Varetto, A., Zedda, M., & Ieraci, V. (2015). Occupational stress, anxiety and coping strategies in police officers. Occupational Medicine, 65(6), 466-473.
2. Aggarwal, G. (2011). Demographic study in occupational stress among the faculty members with special reference to business school in India. International Journal of Management Studies, 3(4), 74-83.Akpochafo, G.O. (2014). Self efficacy and some demographic variables as predictors of occupational stress among primary school teachers in Delta state of Nigeria. Education, 134(4), 457-464.
3. AK. Shrivastva (2001) Occupational stress and consequent strains in relation to personality, Indian journal of community psychology vol. 27 pp. 29-36.
4. Burman, S., & Shastri, S. (2013). A comparative study of the organizational commitment and occupational stress level of employees of virtual teams and traditional teams. International Journal of Social Science Research, 5(1), 1536-1540.